Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
Name — Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt. — AIH & C
Lesson/plan — B.A. AIH&C (H), part-1, paper-I
Name of the Topic - political Causes of Success of Turks against Rajput.
Date- 09-04-2024

राजनीतिक कारण - (Political causes)

(1) तुर्कों में उत्तराधिकारी - तुर्कों में योग्य उत्तराधिकारी ही चुना जाता था। जबकि राजपूतों में वंश-परम्परा के कारण ही राजा बनता था। चाहे वह अयोग्य ही क्यों न हो।

(2) तुर्कों में जाति भेद नहीं → तुर्क लोग जातिभेद को कोई महत्व नहीं देते थें। राजपूत शासकों में वंश परम्परा, रंग व जाति को बड़ा महत्व दिया जाता था। ऊँचे-ऊँचे पद केवल ब्राह्मणों को ही मिलते थें।

(3) राजपूतों का जनहित की ओर ध्यान न दे पाना :— राजपूत शासक लड़ाई में लगे रहने के कारण जनहित सम्बंध कार्यों की तरफ ध्यान दे पाते थें, जिससे जनता उनसे प्रसन्न नहीं रहती थी। घरेलू झगड़ों में लगे रहने के कारण वे अपने विदेशी विभाग को भी उन्नत न बना सके।

(4) राष्ट्रीयता की भावना का लोप होना :— भारतवासियों में राष्ट्रीयता की भावना भी लुप्त होती जा रही थी। भारतवासियों की यह धारणा बन चुकी थी कि युद्ध

P.T.O.

Scanned with CamScanner

केवल राजाओं का कर्तव्य है, उनका नहीं। अतः तुर्क आक्रमण के समय भारतीय जनता निष्क्रिय और उदासीन बनी रहती थी। इस प्रकार राजपूत नरेशों को जनता से सक्रिय सहयोग नहीं मिला।

(5) राजपूतों की त्रुटिपूर्ण शासन-प्रणाली :— राजपूतों की शासन प्रणाली भी त्रुटिपूर्ण थी। राजपूत नरेश निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी होते थे। उनका पद प्रायः वंशानुगत होता था। प्रायः ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों को ही उच्च उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था। जन-साधारण की प्रशासन में कोई भागीदारी नहीं थी। अतः जनता शासन कार्यों के प्रति उदासीन बनी रहती थी।

(6) राजपूतों की सामन्त प्रथा :— सामन्त प्रथा भी राजपूतों के पतन का मुख्य कारण थी। सामन्तशाही के समस्त दुर्गुण उनमें विद्यमान थे। सामन्त स्वार्थी होते थे। मौका आने पर वे सदैव स्वतंत्र हो जाते थे। अतः पराजय अवश्यम्भावी रहती थी।

(7) राजनीतिक एकता का अभाव → तुर्कों के आक्रमण के समय भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था। सम्पूर्ण भारत अनेक छोटी-छोटी राज्यों में बंटा हुआ था। जिनमें परस्पर एकता अथवा सद्भावना का अभाव था। देश में एक ऐसी सार्वभौमिक केन्द्रीय सत्ता का अभाव था। जिसके अधीन सभी राजपूत नरेश संगठित होकर शत्रु का मुकाबला कर सके। डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव का कथन है कि प्रत्येक राजा को अकेले ही युद्ध करना पड़ा था मानो वह केवल अपने और अपने राज्य के लिए लड़ रहा है। सम्पूर्ण देश के लिए नहीं थी। संकट के समय भी हमारे शासक मिलकर अपनी सुरक्षा के लिए आक्रमणकारी के विरुद्ध युद्ध न कर सके।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(8) पारस्परिक शत्रुता और ईर्ष्या द्वेष → राजपूतों में एकता का अभाव था। वे आपसी फूट, ईर्ष्या, द्वेष आदि के शिकार बने हुए थे। कोई भी राजपूत नरेश तुर्क शासक का उत्कर्ष सहन करने को तैयार नहीं था। उनमें मिथ्याभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था। वे सदैव आपस में लड़ते रहते थे; तथा व्यर्थ में अपनी शक्ति को नष्ट करते थे; पृथ्वीराज तृतीय ने चन्देलों, चालुक्यों और गहड़वालों के विरुद्ध सैनिक अभियान करके उन्हें अपना कट्टर शत्रु बना लिया था। अतः जब पृथ्वीराज पर मुहम्मद गोरी ने आक्रमण किया तो उसे चन्देलों, चालुक्यों और गहड़वालों की ओर से कोई सहायता नहीं मिली।

(9) दृढ़ सीमान्त नीति का अभाव :— राजपूत नरेशों ने देश के सीमान्त प्रदेशों की सुरक्षा का उचित प्रबंध नहीं किया। उन्होंने उत्तरी पश्चिमी सीमान्त की सुरक्षा के लिए न तो सुदृढ़ दुर्ग बनवाये और न वहाँ शक्तिशाली सेना रखी। फलतः तुर्क आक्रमणकारी के भारत के उत्तरी-पश्चिमी द्वार से आते रहे, और भारतीय प्रदेशों पर आक्रमण करते रहे। राजपूत नरेशों ने तुर्क आक्रमणकारियों की सीमा पर ही रोकने के लिए प्रभावशाली कदम नहीं उठाये।

(10) तुर्कों का विरोध करने के लिए राजपूतों के संयुक्त प्रयासों का अभाव। — राजपूत राजाओं का अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग था। उनमें कोई सहयोग की भावना नहीं थी। इसका मुख्य कारण राजपूतों में कोई राजपूत राजा था जो कि इस कार्य को कर सकता था, परन्तु उसमें दूरदर्शिता का अभाव था; तथा उसके विलासी जीवन ने उसे इस कार्य के लिए असमर्थ

P.T.O.

Scanned with CamScanner

बना दिया था। अन्य राजपूत राजाओं पर तुर्की के आक्रमण के समय किसी दूसरे राजपूत राजा ने समय पर उसकी मदद नहीं की। पृथ्वीराज चौहान ने तो कन्नौज के शक्तिशाली राजा जयचन्द को अपना दुश्मन बना लिया था।

(iii) तुर्की के आक्रमणों का विरोध करने वाले राजपूत राजाओं का निर्बल तथा असहाय होना।

अलग-अलग राजाओं ने तुर्की के आक्रमणों का अकेले ही विरोध किया। किसी एक राजा पर तुर्की के आक्रमण होने के समय वह राजा निर्बल तथा असहाय हो गया। ऐसी स्थिति में उसकी तुर्की से हार होना अवश्यम्भावी थी। पंजाब के हिन्दुशाही वंश के राजाओं को अधिकतर अकेले ही तुर्की का प्रतिरोध करना पड़ा इसी प्रकार चौहान नरेश पृथ्वीराज को तथा गहड़वाल नरेश जयचन्द को भी अकेले ही दुश्मन सेना का सामना करना पड़ा, अन्य राजपूत नरेशों ने उनका साथ नहीं दिया।

भारती कुमारी
A.I.H.S.C
09-04-2021